NOTES FOR B.A.-II (HISTORY) HONOURS, 2020.

NOTES PREPARED BY →

DR. MANITA KUMARI YADAV
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF HISTORY
VAISHALI MAHILA COLLEGE
HAJIPUR, BIHAR UNIVERSITY
MUZAFFARPUR.

Scanned with CamScanner

अकबर की पश्चिमोत्तर सीमांत नीति (1585ई० - 1598ई०)

कारण → (i) वैज्ञानिक सीमांकन का निर्धारण
(ii) उज्बेकों से मुगल की प्रतिद्वन्द्विता
(iii) सिंध एवं बलूचिस्तान के क्षेत्र का निर्धारण
(iv) युसुफजाही, अफरीदी तथा गिलजई कबीला के लोगों का संघर्ष

— किन परिस्थितियों से प्रेरित होकर अकबर ने पश्चिमोत्तर सीमान्त नीति का प्रतिपालन किया?

उ० → मुगल बादशाहों में अकबर प्रथम शासक था जिसने पश्चिमोत्तर सीमांत प्रदेश की नीति का प्रतिपादन किया। उसने यह नीति 1585ई० - 1598ई० तक जारी रखा। इन वर्षों में अकबर द्वारा पश्चिमोत्तर सीमांत नीति के मूल में अनेक महत्वपूर्ण कारक उत्तरदायी थे। प्रथमतः अकबर ने क्षेत्रों की वैज्ञानिक सीमा के रूप में निर्धारण करना चाहता था। दूसरा कश्मीर से सिंध तक फैले क्षेत्र को जीतना भी उनके लिए आवश्यक था। वास्तविकता यह थी कि पश्चिमोत्तर सीमांत के आगे काबुल था जो बाबर की मृत्युपरान्त हुमायूँ ने कामरान को दिया था। काबुल पर मिर्जा हकीम का शासन था। काबुल के आगे मध्य एशिया का क्षेत्र पड़ता था और वहाँ उज्बेकों का शासन था तथा उज्बेकों से मुगलों की प्रतिद्वन्द्विता चिर-परिचित थी। यह भी सर्वविदित है कि उज्बेक नेता अब्दुल्ला खाँ उज्बेक अपनी अकबर का प्रबल शत्रु था तथा अकबर यह कदापि नहीं चाहता कि उज्बेक अपनी शक्ति का विस्तार काबुल पर करे।

दूसरी ओर सिंध एवं बलूचिस्तान के राज्य थे, जिसकी सीमा ईरान के सफावी साम्राज्य से मिलती थी और यह भी सर्वविदित है कि मुगलों का सफावी के साथ

Scanned with CamScanner

भी प्रतिद्वंद्विता थी।

— मुगल शासकों में अकबर प्रथम शासक था जिसने दक्षिण भारत में अभियान संचालित किया। वास्तविकता यह है कि दिल्ली सल्तनत में अलाउद्दीन खिलजी के पश्चात अकबर ऐसा प्रथम शासक था, जिसने दक्षिण नीति का स्पष्ट रूप से प्रतिपादन किया। दक्षिण में चार महत्वपूर्ण राज्य थे → (i) खानदेश (ii) अहमदनगर (iii) बीजापुर (iv) गोलकुंडा

— खानदेश → खानदेश ताप्ती नदी घाटी क्षेत्र में स्थित था जिसकी स्थापना "मलिक रजा फारुकी" ने 1399 ई० में की थी। इसी कारणवश इस वंश को फारुकी वंश के नाम से जाना जाता है। इसकी राजधानी बुरहानपुर थी तथा असीरगढ़ का किला जो सैन्य दृष्टिकोण से सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। खानदेश के ही अधीन था। इस वंश का सर्वाधिक प्रसिद्ध राजा आदिल खान-II था, जिसने गोंडवाना तथा झारखंड पर अधिकार कर लिया था। चूँकि इस वंश के राजाओं ने खान की उपाधि धारण की थी, इसकारण इसे खानों का देश खानदेश कहा जाता था।

— बीजापुर → बीजापुर की स्थापना 1489 ई०-90 ई० में युसुफ आदिलशाह के द्वारा किया गया था यहाँ पर आदिलशाही स्थापित था। आदिलशाही वंश के शासक स्वयं को तुर्की के ऑटोमन साम्राज्य के वंशज मानते थे। यहाँ पर शिया को मानने वाले राजपूतों का जमवाड़ा था। इब्राहिम आदिलशाह इस वंश का प्रथम शासक था, जिसने शाह की उपाधि धारण की। इसने फारसी के स्थान पर हिंदवी (दक्किनी उर्दू) को अपनी राजभाषा बनाया तथा हिन्दुओं को महत्वपूर्ण पद दिया। इस वंश का दूसरा शासक अली आदिल शाह था, जिसने चाँद बीबी से विवाह किया था। अली ~~आद~~ शाह के बाद इब्राहिम आदिल शाह-II शासक बना, जिसने जगतगुरु की उपाधि धारण की थी।

— गरीबों की सहायता करने के कारण इसे अबला बाबा तथा निर्धनों का मित्र कहा गया है। इसके शासनकाल में ... शासिका थी। इब्राहिम

Scanned with CamScanner